# बप्पा आला रे आला.... आला रे आला....गणपति बप्पा मोरया

हर शुभ कार्य अथवा धार्मिक कार्य का आयोजन में गणपति का पूजन करना, रेखा का चित्र बहीं के शुरू में, भूमि पूजन के समय, गृह प्रवेश के समय, हर मांगलिक पर्व में करना, इसके साथ नारियल और कलश का प्रयोग भी अवश्य करते हैं इन सबके पीछे आध्यात्मिक रहस्य क्या है आइए जानते हैं...

आपने ये भी गौर किया होगा कि उनकी पूजा के स्थान पर केले के पत्ते ज़रूर होते हैं। गणेश जी को विधि और सिद्धि के नायक कहते हैं। आज हम इनके आध्यात्मिक रहस्यों के बारे में जानेंगे...

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि दो पत्नियां दिखाई जाती हैं। ये भी क्रमशः ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता की प्रतीक हैं। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच समझ कर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा उसे सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

## गणेश जी के साथ केले का पता क्यों दिखाते हैं

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला और फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की ये विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता निकलता जाता है। फिर यदि उसको हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो उसकी एक बात में एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है - जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात।।

अतः गणपति के साथ केले को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

## 'लक्ष्मी' शब्द का आध्यात्मिक अर्थ

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर खड़े या बैठे दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उसके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शांति का मूर्तरूप है। क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता, शांति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना, अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी राज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है।

## गणपति गणनायक का सूचक

गणपति जी के और भी कई अलंकार दिखाए जाते हैं। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि गणपति जी परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे पूर्णतः जीवन में व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है।

परन्तु जब हम यह सुनते और मानते हैं कि गणपति शिव सूत, शिव के बालक अथवा पुत्र ही गुणवाचक या कर्त्तव्य वाचक नाम है, तो हमें उनके परिचय का और अधिक स्पष्टीकरण मिलता है। गणपति अथवा गणनायक एक प्रकार से प्रजापति अथवा प्रजापिता शब्द का पर्यायवाची है। क्योंकि गण और प्रजा लगभग समानार्थक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि गणपति प्रजापिता ब्रह्मा ही थे। यह उनका कर्त्तव्य वाचक नाम है। क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा ने ही शिव के ज्ञान को प्राप्त कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। ब्रह्मा जी की जीवन कहानी को सुनने के बाद इस कथा का रहस्य भी समझ में आ जाता है कि कैसे परमपिता परमात्मा शिव ने उनके पुराने मानवीय संस्कारों के स्थान पर उन्हें नये संस्कार और विशाल बुद्धि प्रदान की। उन्होंने इस ईश्वरीय बुद्धि के आधार पर नई सृष्टि की स्थापना के कार्य में आये विघ्नों को पार किया इसलिए वे विघ्न विनाशक भी हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य भी जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करते हैं और उनके लक्षणों को धारण करते हैं उस पर भी ये लक्षण चरितार्थ होते हैं, गोया ये भी विघ्न विनाशक बन जाते हैं। धर्म की अति ग्लानि की इस बेला में ही परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। पुनः सतयुग की स्थापना करते हैं, मनुष्य को देवता बनाते हैं और नर को श्री नारायण पद के अधिकारी बनाते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक तीनों कालों के इतिहास का तथा आत्माओं के आवागमन का चक्र खोलकर हमारे सामने रख देता है। और इस रहस्य को जान लेने से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। अमंगल-मंगल में, अशुभ-शुभ में, और अनिष्ट-निर्विघ्नता में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए गणपति ज्ञान-निष्ठ अवस्था के प्रतीक हैं वैसे ही ये स्वास्तिक भी ज्ञान को एक रेखा चित्र द्वारा एक दृष्टि से ही समझा देता है। और इसीलिए इसे भी लोग गणेश जी कहने लगे।

जैसे वह हर शुभ कार्य अथवा धार्मिक कार्य का आयोजन करने में गणपति का पूजन करने लगे वैसे ही वे रेखा का चित्र बहीं के शुरू में, भूमि पूजन के समय, गृह प्रवेश के समय, हर मांगलिक पर्व में करने लगे। इसके साथ नारियल और कलश का प्रयोग करने लगे। क्योंकि परमपिता ज्योति स्वरूप परमात्मा की आकृति भी नारियल जैसी ही है। और ज्ञान सागर पिता ने 'सागर को गागर में' बंद करने की उक्ति के अनुसार नर नारियों को ज्ञान कलश दिया और स्वास्तिक रूपी चक्र की तरह सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया। तो अब हम इस आध्यात्मिक रहस्य को समझते हुए अपने जीवन में आने वाले विघ्न, विपरित परिस्थितियों को पार करने के लिए गणेश जी के जीवन को ज्ञान वर्धक बनकर पार करें। करेंगे ना! या सिर्फ पूजा पाठ तक ही...!

## स्वास्तिका सही मायने में है क्या...

**जब किसी नई चीज़ को, नये स्थान को आरम्भ करना होता है तो उसके पूर्व 'स्वास्तिका' ज़रूर चित्रित करते हैं। 'स्वास्तिका' शब्द का अर्थ है - 'शुभ', 'मंगलकारी' इसलिए यह विघ्न विनाशक गणपति का समानार्थक है। स्वास्तिक वास्तव में सारे ज्ञान का सार चित्रित करता है। इसके बीच की दो रेखायें जो परस्पर एक-दूसरे को समकोण पर विच्छेद करती हैं, वे किसी एक वृत के दो व्यासों (डायमीटर) के समान है। जो कि उस वृत को चार ऐसे बराबर भागों में बांटते हैं जो परस्पर विपरित दिशा में हैं और इसीलिए दार्शनिक दृष्टि से विपरित सामाजिक, राजनितिक, धार्मिक, स्थिति के संकेतक हैं। स्वास्तिक की चार भुजायें इन्हीं चार दिशाओं और दशाओं को इंगित करती है। सबसे ऊपर की दायीं ओर की भुजा सतोप्रधानता, पवित्रता, सुख और शांति की द्योतक है। और इसलिए यह सृष्टि चक्र के सर्व प्रथम युग सतयुग को चित्रित करती है। इसके बाद दायीं ओर नीचे की दिशा चित्रित करने वाली भुजा धीरे-धीरे पवित्रता और सुख-शांति के ह्रास को जताती हुई त्रेतायुग की द्योतक है। जिसमें सात्विकता, पवित्रता, सुख और शांति विराजमान होते हैं। तत्पश्चात् बायीं दिशा में संकेत करती हुई भुजा इस बात को चित्रित करती है कि त्रेता के अंत में देवता वाम मार्ग में चले गए। धर्म की ग्लानि आरम्भ हो गई। जीवन वाम पक्ष की ओर उड़ गया अर्थात् उसमें अपवित्रता, दुःख और अशांति ने प्रवेश किया और समाज को विभाजित करने वाले कारक, जैसे अनेक धर्म, अनेक भाषायें, अनेक वाद शुरू हो गए और इनके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़े, घृणा, द्वेष- ये भी दिनोंदिन बढ़ते चले गए।**

**इसके बाद स्वास्तिक की चौथी भुजा जो बायीं ओर ऊपर की ओर दिशा में उठी है वो बुराई, लड़ाई, पापाचार, अत्याचार, विकार के बढ़ते जाने का द्योतक है। यहां तक कि धर्म की अति ग्लानि हो जाती है और कलियुग के अंत में घोर पापाचार और नर संहार होता है।**

# जीवन की अन्तिम यात्रा में उपराम और बेहद के वैरागी बनो

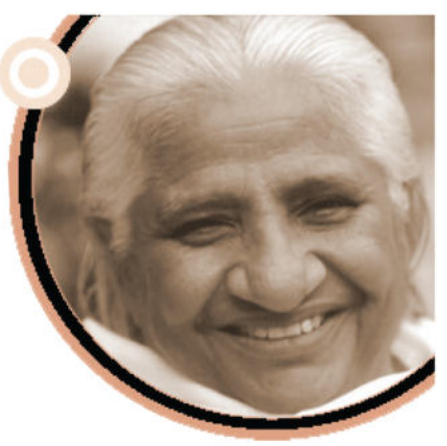

**हम सब बाबा के इशारे रोज़ सुनते रहते हैं। पहले तो बाबा ने हमें यह कंगन बांधा कि तुम्हें अपनी मन्सा वृत्ति से वायुमण्डल को बदलने की सेवा करनी है। बाबा ने सभी के लिए यह अन्डरलाइन की बात कही कि एक सेकण्ड में अपने संकल्पों को एकाग्र करो। अपनी श्रेष्ठ स्थिति और पॉवरफुल वृति द्वारा ऐसा वायुमण्डल बनाओ। एक सेकण्ड में निराकारी, आकारी, साकारी बनो, तो हर एक स्वयं अपनी ऐसी स्थिति अनुभव करते हो? बापदादा ने कहा बच्चे ज्ञानी तो बने हो पर ज्ञान स्वरूप नहीं। विघ्नों का कारण बताया कि ईश्वरीय लगन कम है। परमात्म प्यार का अनुभव कम है। मूल तो बाबा का इशारा है कि एक सेकण्ड में संकल्पों को एकाग्र करो, ऐसी अपनी श्रेष्ठ ऊंची स्थिति बनाओ। यह बहुत बड़ी मंज़िल है। प्रैक्टिकल में इसका अभ्यास बहुत कम है। अगर एक सेकण्ड में संकल्पों को एकाग्र करने का अभ्यास हो तो कभी ऊंची स्थिति से नीचे की स्थिति में, वातावरण के प्रभाव में आ नहीं सकते। अभी तक आते हैं तो इससे सिद्ध है कि एकाग्रता की शक्ति कम है।**

## मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति का अनुभव

हम सबके सामने बापदादा सैम्पल है जो निराकारी, आकारी और साकारी स्थितियों में सदा रहते और हम बच्चों को भी यही इशारा देते, तो अब इसी पुरुषार्थ के मेहनत की दरकार है। ऐसा अभ्यास हो जो उसका प्रभाव वायुमण्डल पर अथवा साथियों पर भी पड़े। इसके लिए कोई विधि विधान बनाओ। योग में बैठते तो हो लेकिन पॉवरफुल स्थिति में स्थित होकर बैठो जो शक्ति जमा हो और सारा दिन वह शक्ति काम में आये। ऐसे मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति को अनुभव करो।

## हमारे योग से संगठन में सहयोग मिले

बाबा ने कहा संगमयुग का विशेष ख़जाना है अतीन्द्रिय सुख, तो निरन्तर उस सुख की अनुभूति होती है? इसकी विधि बाबा ने सुनाई कि न्यारे और प्यारे बनो, तो कहाँ तक हम न्यारे-प्यारे रहते हैं? हमारी यही शुभ भावना है कि अकेले में तो भले अभ्यास करते, कमाई करते लेकिन सारे संगठन को उसका सहयोग मिलना चाहिए। तो ऐसा ग्रुप बनाओ जो एक दो की मदद से ऐसा वायुमण्डल बन जाए, जिससे आने वाले भी अनुभव करें कि यहाँ हर एक परमात्म प्यार में, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूतियों में मग्न हैं। इसके लिए प्रैक्टिस करनी है सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने की। एकाग्र होकर वतन में बैठ जाएं, जिसको बाबा कहते निरन्तर याद हो। यह मन्त्र मुरलियों में रोज़ हम सब सुनते हैं परन्तु अब इसका प्रभाव हमारी स्थिति पर हो। कर्म करते भी हम निरन्तर योगी रहें, इसकी प्रैक्टिस करो।

## एकाग्रता बढ़ाने की विधि

कम-से-कम रोज़ 6 घण्टा इस अभ्यास के लिए समय निकालो, दिनचर्या बनाओ। चलते-फिरते, कर्म करते भी अपनी ऐसी स्थिति बनाकर रखो। सारे दिन में 4 पहर, 6-6 घण्टे की होती है तो एक पहर का यह पुरुषार्थ हो। इसका हर एक कंगन बांधो। जैसे बाबा ने कहा है सुबह 4 से 8 बजे तक किसी विशेष व्यवहार में नहीं आओ, उस समय मौन में रहो। फिर रात्रि के समय भी मौन में रह सकते। इसलिए हमारा विचार है कि खास 21 दिन का ऐसा प्रोग्राम बनाओ। जैसे जैनियों का चतुरमास होता तो खास साधना करते हैं, व्रत रखते हैं, मौन रखते हैं। कुछ-न-कुछ एक्स्ट्रा जप-तप करते हैं, बाहर कहीं नहीं आते-जाते। भल उनका तो हठ से होता। हम सहजयोगी हैं लेकिन हमें भी स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए योग साधना ज़रूर करनी चाहिए।

## दृढ़ता शक्ति को बढ़ाएं

हम करेंगे तो हमें देख दूसरे करेंगे। तो अब दृढ़ संकल्प की शक्ति बढ़ाओ, तब मन्सा सेवा जो अन्तिम सेवा है, उसके प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाई देंगे। तो अब ऐसी पॉवर स्वयं में हर एक भरें जिससे मन्सा सेवा कर सकें। इसी विधि से हम विकल्पों और विकर्मों से मुक्त हो सकेंगे अथवा क्रोधमुक्त आदि का जो पुरुषार्थ करते वह भी सहज हो जायेगा।

आप सबको एक संकल्प सुनाती – पता नहीं आपको भी आता है या नहीं। मुझे तो रोज़ आता, जैसे बाबा कानों में कह रहा है – बच्ची एवररेडी हो! ड्रामा को भी देखते, ज्ञान के हिसाब से भी अभी 5 हजार वर्ष का चक्र पूरा हो रहा है। तो यही संकल्प आता कि अभी टू लेट का बोर्ड लगने वाला है। यह भी दिखाई देता कि अब धर्मराज का पार्ट भी जल्दी ही खुलने वाला है। एडवांस पार्टी भी जा चुकी हैं, उसकी भी तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। सभी महारथियों को बाबा ने अचानक बुला लिया। अब हम सबको भी आखिर यहाँ कब तक रहना है!